पाठ-18

पथिक से

आइए सीखें : ● सांसारिक समस्याओं का साहस और विवेक पूर्वक सामना करना ● साधारण - वाक्यों को काव्य पंक्तियों में बदलना ● पर्यायवाची शब्द, समानोच्चारित शब्द ● अलंकार की परिभाषा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार।

(पाठ परिचय : *अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने में पथिक के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती ही हैं, लेकिन मार्ग के सुहावने दृश्य-नदियाँ, झरने, पहाड़, वन भी अपने सौन्दर्य से उसे आकर्षित करते हैं। जो स्थिति साधारण-यात्रा की है, वही स्थिति जीवन-यात्रा की भी है। सांसारिक समस्याएँ - दुख, शोक, हताशा उसे कर्त्तव्य से विमुख करती हैं। इस कविता में कवि ने जीवन-पथ के पथिक को सचेत करते हुए परामर्श दिया है कि इन सब बाधाओं का साहस और विवेकपूर्वक सामना करते हुए वे अपने-अपने कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर होते रहें।)*

पथ भूल न जाना पथिक कहीं
पथ में काँटे तो होंगे ही,
दूर्वादल सरिता, सर होंगे।
सुन्दर गिरि-वन-वापी होंगे
सुन्दर-सुन्दर निर्झर होंगे।

सुन्दरता की मृगतृष्णा में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

जब कठिन कर्म पगडंडी पर,
राही का मन उन्मन होगा।
जब सपने सब मिट जाएँगे,
कर्त्तव्य मार्ग सम्मुख होगा।

शिक्षण संकेत : ■ कविता को हाव-भाव एवम् लय के साथ सुनाएँ। छात्रों से सस्वर अनुकरण वाचन करवाएँ। ■ कविता के भाव को स्पष्ट करें। ■ कठिन शब्दों के अर्थ, पर्यायवाची शब्द एवम् विलोम शब्दों द्वारा पंक्तियों की व्याख्या की जाए। ■ स्वतंत्रता संग्राम में शहीद, वीरों के जीवन की प्रेरक घटनाओं का उल्लेख किया जाए।

तब अपनी प्रथम विफलता में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

अपने भी विमुख पराये बन,
आँखों के सम्मुख आएँगे।
पग-पग पर घोर निराशा के,
काले बादल छा जाएँगे।

तब अपने एकाकीपन में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

रणभेरी सुन-सुन विदा-विदा
जब सैनिक पुलक रहे होंगे,
हाथों में कुमकुम थाल लिए
जलकण कुछ ढुलक रहे होंगे।

कर्त्तव्य प्रेम की उलझन में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे,
जब महाकाल की माला में ।
माँ माँग रही होगी आहुति,
जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।

पल भर भी पड़ असमंजस में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

- डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन

कवि परिचय : डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' मूल रूप से उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के रहने वाले थे, किन्तु उनकी आधी शिक्षा मध्यभारत में ही हुई थी। ग्वालियर के महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज में व्याख्याता के पद पर उनकी नियुक्ति हुई। उज्जैन के माधव कॉलेज में वे प्राचार्य रहे। वे विक्रम विश्वविद्यालय में बरसों कुलपति के रूप में कार्यरत रहे। सुमन जी हिन्दी के अग्रणी कवियों में माने जाते हैं।

टिप्पणी : मृगतृष्णा– मृगतृष्णा एक प्रकार का भ्रम है। गर्मी के दिनों में, जब सूर्य की किरणें धरती पर आती हैं तब वे गर्म हवा की विभिन्न ताप वाली परतों से होती हुई धरती से वापस लौट जाती हैं। लौटते समय आँखों में इसकी चमक दिखाई देती है जो रेत में पानी का भ्रम पैदा करती है। हरिण इसी भ्रम के कारण रेत के मैदानों में पानी की तलाश करता रहता है। इसीलिए इसे मृगतृष्णा कहा गया है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

पथिक	--------------	दूर्वादल	--------------
वापी	--------------	निर्झर	--------------
जलकण	--------------	उन्मन	--------------
एकाकीपन	--------------	कुमकुम थाल	---------------
असमंजस	--------------	आहुति	--------------
हवन सामग्री	--------------		

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) 'पथ में काँटे तो होंगे ही' इस पंक्ति में काँटे शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ख) नीचे दो खण्डों में कविता की आंशिक पंक्तियाँ दी गई है। खण्ड 'अ' और खण्ड 'ब' से एक सही पंक्ति लेकर पूरी कीजिए।

अ	ब
(अ) जब कठिन कर्म पगडण्डी पर	(अ) जब सैनिक पुलक रहे होंगे।
(आ) माँ माँग रही होगी आहुति	(आ) काले बादल छा जाएँगे।
(इ) रणभेरी सुन-सुन विदा-विदा	(इ) राही का मन उन्मुख होगा।
(ई) पग-पग पर घोर निराशा के	(ई) जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।

(ग) स्वतंत्रता की ज्वाला में माँ आहुति की माँग कर रही है। 'माँ' शब्द के प्रयोग द्वारा यहाँ किस माँ की ओर संकेत किया गया है?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

(क) जीवन पथ पर चलते हुए पथिक को किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है? कविता के आधार पर कोई तीन बाधाओं को दर्शाइए।

(ख) किस स्थिति में कदम-कदम पर मनुष्य अपने आपको घोर निराशा में देखता है?

(ग) सुन्दरता की मृगतृष्णा का क्या तात्पर्य है ?

(घ) कवि के अनुसार पथिक के सामने कब असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो सकती है ?

(ङ) कवि ने इस कविता में प्रकृति के कौन-कौन-से अंगों-उपांगों का चित्रण किया है जो पथिक को उसके मार्ग में मिलते हैं?

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के चार-चार पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं, जिनमें से एक-एक शब्द गलत है। गलत शब्द पर गोला लगाएँ-

(क) पहाड़ - गिरि, अचल, पाषाण, पर्वत

(ख) वन - अरण्य, जम्बुक, कानन, विपिन

(ग) तालाब - सर, तड़ाग, सरोवर, तटिनी

प्रश्न 2. नीचे कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द दिए गए हैं। दोनों को अलग-अलग लिखिए-

प्रथम, सम्मुख, विफलता, अन्तिम, माँग, कठिन, विमुख, सफलता, अनुराग, प्रलय, पुष्ट, जर्जर, विराग, सरल, पूर्ति, सृष्टि ।

शब्द	विलोम शब्द
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

प्रश्न 3. कविता में आए पुनरुक्ति शब्दों (जैसे अपना-अपना) को छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 4. एकाकीपन शब्द में 'एकाकी' में 'पन' प्रत्यय है। इसी प्रकार 'पन' प्रत्यय जोड़कर चार शब्द बनाइए।

प्रश्न 5. 'सरित सर' में अनुप्रास अलंकार है। अनुप्रास अलंकार के अन्य उदाहरण छाँटकर लिखिए।

और भी जानिए :

1 मैया, मैं तो चन्द्र खिलौना लैंहौं ।

2 चरण-कमल बन्दौ हरि राई ।

यहाँ उदाहरण 1 में चन्द्र खिलौना - चन्द्रमा रूपी खिलौना

2 में चरण कमल - चरण रूपी कमल

यहाँ उपमेय और उपमान को एक कर दिया गया है।

नियमीकरण :

जहाँ गुण की समानता के कारण उपमेय में ही उपमान का आरोप कर दिया जाए, वहाँ **रूपक अलंकार** होता है।

यह भी जानिए :

1. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात।।

इस उदाहरण में श्रीकृष्ण के सुन्दर, श्याम शरीर में नीलमणि पर्वत की और शरीर पर शोभायमान पीताम्बर में प्रभात की धूप की मनोरम कल्पना है, जिसमें सम्भावना की गई है।

नियमीकरण : जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाती है, वहाँ **उत्प्रेक्षा अलंकार** होता है, जैसे-

2. फूले कास सकल महि छाई। जनु बरसा कृत प्रगट बुढ़ाई।।

यहाँ कास के फूल (उपमेय) में वर्षा ऋतु के बुढ़ापे (उपमान) की सम्भावना की गई है। संक्षेप में कह सकते हैं कि

जहँ कीजै सम्भावना, तहँ उत्प्रेक्षा जान।

इस अलंकार में जनु, मनु, जानो, मानों, ज्यों, मानहुँ जैसे वाचक शब्द आते हैं।

6. **निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर उनमें प्रयुक्त अलंकार पहचान कर, उनके नाम लिखिए-**

क. जब कठिन कर्म पगडंडी पर ।
राही का मन उन्मन होगा ॥

ख. मानों झूम रहे हैं तरु भी, मन्द पवन के झोंकों से ।

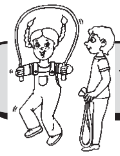

योग्यता विस्तार

1. डॉ. शिव मंगलसिंह 'सुमन' की लिखी पुस्तकें विद्यालय के पुस्तकालय से प्राप्त करके पढ़िए।
2. इस कविता को कण्ठस्थ करके बालसभा में सुनाइए।
3. कर्त्तव्यपरायणता से सम्बन्धित कहानी या कविता शिक्षक की सहायता से खोजिए और पढ़िए।